© June 2024 IJRTI | Volume 9, Issue 6 | ISSN: 2456-3315

राजनैतिक जागरण में महिलाओं का योगदान राजस्थान के संदर्भ में ऐतिहासिक अवलोकन

डॉ. धीरेन्द्र पाल सिंह

सहायक आचार्य, इतिहास
राजकीय महाविद्यालय, सादड़ी

सारांशः– उन्नीसवीं शताब्दी न केवल भारतीय महिलाओं के लिए बल्कि राजस्थान की महिलाओं के लिए भी नव जागरण का काल था। इस समय भारत में महिलाओं के सुधार और जागरण का मुद्दा प्रमुख बन गया था। इस काल में अनेक समाज सुधारक हुए जिन्होंने महिलाओं की दशा को सुधारने की दिशा में कार्य किया। इसी कड़ी में महिलाओं ने अपने विवेक को प्रज्जवलित करके अपने अधिकारों की लड़ाई भी लड़ी। उन्होंने संगठन बनाए, पुस्तकें लिखी और जनजागरण का कार्य किया।राष्ट्रीय स्तर में जहां सावित्रीबाई फुले, रमाबाई रानाडे, ताराबाई शिंदे, एनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू, कमला चट्टोपाध्याय, कस्तूरबा, विजयलक्ष्मी पंडित जैसी महिलाएं राष्ट्रीय आंदोलन और राजनीतिक जागरण में अपनी भूमिका निभा रही थी।

राजस्थान में नारायणी देवी वर्मा, किशोरी देवी, जानकी देवी बजाज, इंदिरा देवी, विद्या देवी, सरस्वती बोहरा, शांति देवी, सुशील त्रिपाठी, शांति गुप्ता, शारदा देवी, सुशीला गोयल, धापी दादी आदि ने राजस्थान के राजनीतिक जागरण में योगदान दिया और तत्कालीन रियासतों में हो रहे शोषण का सक्रिय प्रतिरोध किया।ये महिला सुधारक तत्कालीन सुधारक महात्मा गांधी, सुभाष चंद्र बोस आदि की विचारधारा से प्रभावित थी। किसान आंदोलन, प्रजामंडल आंदोलन, हरिजन उद्धार, खादी ग्रामोद्योग, शिक्षा तथा समाज सुधार आदि क्षेत्रों में इनका योगदान ऐतिहासिक रहा है।इतिहास लेखन की सबाल्टर्न धारा के अंतर्गत महिलाओं के इतिहास पर लिखा जाने लगा।

विष्व स्तर पर नारीवादी आंदोलन के फलस्वरूप नारीवादी इतिहास लेखन के क्षेत्र में शोध और पुस्तक लेखन का कार्य होने लगा।भारत में स्वतंत्रता के पश्चात महिलाओं की स्थिति और भूमिका के परिप्रेक्ष्य से इतिहास लिखना आरंभ हुआ। प्राचीन भारत में महिलाओं की भूमिका साहित्यिक स्रोतों में समझने को मिलती हैं।प्राचीन भारतीय संस्कृति में स्त्री व पुरुष को गाड़ी के दो पहियों की तरह माना गया है। इसी दृष्टि से स्त्री को पुरूष की अर्धांगनी कहा गया है।शतपथ ब्राह्मण में लिखा है कि ष्पत्नी पुरूष की आत्मा का आधा भाग है। ''उसी प्रकार भारतीय संस्कृति में माता को ''जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसीश अर्थात माता और जन्मभूमि को स्वर्ग से भी ऊँचा स्थान दिया गया है। मनुस्मृति में कहा है कि ''यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता'' अर्थात जिस स्थान पर महिला की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। वैदिक काल के पश्चात भारतीय महिला की स्थिति में परिवर्तन आया।

गुप्तकाल और उसके बाद के काल में महिलाओं की स्थिति का पतन हुआ और महिलाओं पर बंधन धोपे जाने लगें। मध्यकालीन भारत में बाहरी आक्रमण और रियासतों के सामंती व्यवस्था और पुरातनपंथी विचारों के कारण महिलाओं की स्थिति पुरुषों से कमज़ोर होने लगी। यह विचारणीय तथ्य है कि पूर्व वैदिक काल में महिलाओं कि स्थिति अनुकूल थी। भारत में सीता, सावित्री, द्रौपदी, दमयन्ती, गार्गी, मैत्रेयी जैसी श्रेष्ठ महिलायें हुईं। ऐतिहासिक काल और मध्यकालीन में महिलाओं की कमज़ोर स्थिति पर आधुनिक भारत में अध्ययन हुआ और सुधार की दिशा में कार्य भी आरम्भ हुए।

मूल शब्द– राजस्थान में महिला सुधारक, जन चेतना, रचनात्मक कार्य, राजनीतिक जागरण, महिलाएं, महिलाओं की भूमिका, महिला सुधारक, नारीवादी आंदोलन।

राजस्थान में महिलाओं की भूमिका को भारतीय इतिहास के संदर्भ में समझने की आवश्यकता है। भारत में आजादी से पूर्व राजस्थान एक भौगोलिक अभिव्यक्ति मात्र था। उसमें केन्द्रशासित प्रदेश अजमेर के अतिरिक्त देशी रियासतें थी।इन रियासतों में उदयपुर, डुंगरपुर, बासवाड़ा, प्रतापगढ़, शाहपुरा, जोधपुर, किशनगढ़, बीकानेर, कोटा–बूंदी, सिरोही, जयपुर, अलवर, जैसलमेर, करौली, झालावाड़, टोंक, भरतपुर और धौलपुर थी।शोध पत्र में इन रियासतों के अंतर्गत हुए सुधार कार्यों को रेखांकित किया गया हैं। पुरूष सुधारकों पर शोध होते रहें है किंतु महिला सुधारकों पर कार्य करने की ज़रूरत है। राजस्थान में राजनीतिक जागरण में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण और सार्थक रही है। रियासतों के काल में महिलाएं अपने अधिकार और जनतांत्रिक शासन के लिए दोहरी भूमिका में संघर्ष कर रहीं थी। प्रगतिशील समाज की प्रकृति को परखने के लिए, उस समाज में स्त्रियों की स्थिति का ऐतिहासिक अध्ययन किया जाता हैं।

19वीं शताब्दी में राजस्थान क्षेत्र में अलोकतांत्रिक राजतंत्र और सामंतवादी शासन व्यवस्था प्रचलित थी। राजतंत्र और सामंतवाद शासन प्रणाली में स्वतन्त्रता, समानता, महिला अधिकार और महिलाओं की भागीदारी जैसे सरोकारों कम ही थे। ऐसी परिस्थितियों में महिलाओं की स्थिति दयनीय थी, उन्हे राजनैतिक, सामाजिक एवं सम्पत्ति सम्बन्धी अधिकार नहीं थे। स्त्रियों को अनेक प्रकार की कुप्रथाएँ, परम्पराओं और मान्यताओं ने बांध रखा था। बाल विवाह, बालिका हत्या, पर्दा, दहेज, बहुविवाह जैसी कुप्रथाएं थी। इस काल में राजस्थान में शिक्षा और शासन व्यवस्था में महिलाओं की भागीदारी नगण्य ही थी। मध्यकाल में भी भारत में रजिया सुल्तान,
चांद बीबी, नूरजहां, अहिल्याबाई होल्कर जैसी अभिजात वर्गीय स्त्रियों ने राजनीति में भाग लिया था किंतु यह अत्यंत अल्प प्रतिनिधित्व था। 19वीं शताब्दी के समाज–सुधार आन्दोलन के दौरान महिलाओं की स्थिति को लेकर चर्चा होने लगी और अधिकार चेतना का विकास हुआ। सुधार कार्यों से महिलाओं में जागरण हुआ और वो भी प्रतिनिधित्व की मांग करने लगी। इसके साथ ही, राष्ट्रीय आन्दोलन में भाग लेने वाली महिलाओं को व्यापक प्रेरणा प्राप्त हुई और वे संगठित होने लगी। महिलाओं के संगठन बनने लगे और आंदोलन भी आरम्भ हुए। राजस्थान में भी महिलाएं समाज सुधार के राष्ट्रीय कार्यों और राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरणा पाकर राजनीतिक जागरण में भूमिका निभाने को आगे आई।

राजस्थान के राजनीतिक जागरण में प्रमुख भूमिका निभाने वाली महिलाएंः–

इस शोध पत्र में महिलाओं की ऐतिहासिक स्थिति के अध्ययन के साथ, राजस्थान में महिलाओं की किसान आंदोलन और प्रजामण्डल आंदोलन में भूमिका को समझने का प्रयास किया गया है। इन आंदोलनों में कुछ महिलाओं की भूमिका को रेखांकित करके उन्हें शोध पत्र में शामिल किया है।यह शोध पत्र राजस्थान में महिलाओं की भूमिका को समझने में सहायक होगा। राजस्थान की भौगोलिक एवं प्राकृतिक परिस्थितियों ने यहां के निवासियों को उद्यमी, मेहनती, कष्ट सहिष्णु एवं साहसी बनाया है।

राष्ट्रीय स्तर पर जहां सरोजिनी नायडू, एनी बेसेंट, ताराबाई शिंदे, कमला देवी चट्टोपाध्याय, विजय लक्ष्मी पंडित आदि महिलाएं राष्ट्रीय आंदोलन और राजनीतिक जागरण में अपनी भूमिका प्रदर्शित कर रही थी वही राजस्थान में नारायणी देवी वर्मा, किशोरी देवी, जानकी देवी बजाज, इंदिरा देवी, विद्या देवी, सरस्वती बोहरा, शांति देवी, सुशील त्रिपाठी, शांति गुप्ता, शारदा देवी, सुशील गोयल, धापी दादी आदि ने राजस्थान के राजनीतिक जागरण में योगदान दिया तथा तत्कालीन रियासतों में हो रहे शोषण का सक्रिय प्रतिरोध किया।

किसान आंदोलन में महिलाओं की भूमिकाः–

राजस्थान में किसानों पर रियासत काल में लगातार अत्याचार हो रहे थे उन पर विभिन्न प्रकार के कर और लगान आरोपित करके उनका शोषण किया जा रहा था। जिसके विरोध में विजय सिंह पथिक, रामनारायण चौधरी आदि के नेतृत्व में विरोध और आंदोलन किए गए थे। इन किसान आंदोलनों में महिलाओं की भूमिका भी सक्रिय रहीं थी।
सीता देवी – अलवर किसान आंदोलन में रघुनाथ चौधरी की बेटी सीता देवी ने अलवर राजा जयसिंह के भूमि बंदोबस्त लागू करके, कर और लगान वृद्धि का विरोध किया एवं आंदोलन में हिस्सा लिया।नीमूचणा हत्याकांड का सीतादेवी का विरोध किया।नीमूचणा हत्याकांड की महात्मा गाँधी ने आलोचना की थी।
अंजना देवी – ब्राह्मणों का खेड़ा बिजोलिया में लगभग 500 स्त्रियों के सत्याग्रह जत्थे का नेतृत्व अंजना देवी ने किया । 1932 से 1935 के बीच राष्ट्रीय सत्याग्रह आंदोलन भाग लेने के कारण में भी दो बार जेल की यात्राएं भी भुगतनी पड़ी। बूंदी में महिलाओं के अधिकारों के लिए लड़ने वाली अंजना देवी महिलाओं के लिए प्रेरणा है।
भारत के इतिहास में राजस्थान के किसान आंदोलन पर लेखन कम हुआ हैं। हर क्षेत्रों में महिलाओं ने सामन्ती व्यवस्था के अत्याचारों का विरोध किया है। पश्चिमी राजस्थान में चारण जाति की महिलाओं ने अपनी ओरण भूमि और गाँव की सुरक्षा के लिए व्यापक सत्याग्रह किया है। बाड़मेर जिले के झणकली गाँव की सीलां माता ने जैसलमेर के शासक रावल रणजीत सिंह केद्वारा गाँव के ओरण और खड़ीन पर अवैध कब्जे जमाने का विरोध किया और सत्याग्रह करके जमर किया।इतिहास में महिलाओं की भूमिका सार्थक रहीं है।
किशोरी देवी – सीहोट के ठाकुर मानसिंह के द्वारा सोटिया का वास नामक गांव में किसान महिलाओं के साथ किए गए दुर्व्यवहार के विरोध में 25 अप्रैल 1934 को महिलाओं ने विरोध करके एक सार्थक आंदोलन किया जिसका नेतृत्व किशोरी देवी ने किया। शेखावटी के इस किसान आंदोलन में महिलाओं ने व्यापक रूप से भाग लिया। एक किसान महासम्मेलन बुलाया गया। उतमादेवी ने भी भाषण देकर विरोध किया।इस विरोध ने का राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर का भी ध्यान खींचा था।
धापी दादी – 1935 में कूदन गांव की वृद्ध महिला धापी दादी ने किसानों के ऊपर बढ़ाए गए लगान देने से मना कर दिया और इसका विरोध किया। सीकर के गाँवो में महिलाओं की राजनीतिक चेतना के कारण किसान आंदोलन व्यापक हुआ और हर जगह चर्चा विषय रहा।

प्रजामंडल आंदोलन में महिलाओं की भूमिका:–

विष्व पटल पर रूस की क्रांति हो चुकी थी और जारशाही शासन समाप्त हो चुका था। भारत में गाँधी जी का आगमन हो चुका था और आंदोलन का नेतृत्व अपने हाथ में ले चुके थे। इन सभी का प्रभाव राजस्थान में भी पड़ा और राजनीतिक चेतना का संचार होने लगा । केसरी सिंह बारहठ ने राजनीतिक जागरण में अहम भूमिका निभाई और कहीं साहित्यिक करके लोगों को जागरूक किया।

1920 के दशक में रियासतों के अंदर ठिकानेदारों तथा जागीरदारों के अत्याचार दिन प्रतिदिन बढ़ गए थे। इस काल में किसानों द्वारा विभिन्न आंदोलन चलाए जा रहे थे। राजस्थान केसरी समाचार पत्र, राजस्थान सेवा संघ आदि ने जन जागृति में अपनी में भूमिका निभाई। जिसके कारण लगभग प्रत्येक रियासत में उत्तरदाई सरकार की स्थापना हेतु आंदोलन किए जाने लगे। इस प्रजामण्डल आंदोलन में भी महिलाओं ने अहम भूमिका निभाई।

मेवाड़ प्रजामंडल में–

नारायणी देवी – यह माणिक्य लाल वर्मा की धर्मपत्नी थी। इन्होंने जन जागृति हेतु विभिन्न सभाएं आयोजित की और राष्ट्रवादी गतिविधियों में लिप्त रहने के कारण जेल भी जाना पड़ा। 1944 में भीलवाड़ा में महिला आश्रम नामक संस्था की स्थापना की थी।

पिछड़ी जातियों में समाज सुधार, शिक्षण संबंधित कार्य और आदिवासी छात्रावासों की स्थापना आदि विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में इन्होंने भाग लिया। नारायणी देवी की भूमिका के कारण जनजागरण मजबूत हुआ।

भगवती देवी – इनका जन्म भीलवाड़ा में हुआ, यह नारायणी देवी की प्रमुख सहयोगी रही। 1934 में एक आश्रम की स्थापना की जिसके माध्यम से हरिजन उत्थान हेतु विभिन्न कार्य किया।भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेने के फल स्वरुप 24 अगस्त 1942 को जेल जाना पड़ा।

जयपुर प्रजामंडल–

रामदेवी देशपांडे– यह बलवंत सवाल राम की धर्मपत्नी थी इन्होंने जयपुर में क्रांतिकारी गतिविधियों में भाग लेते हुए विभिन्न आंदोलनों में भाग लिया एवं सत्याग्रह किया इन सत्याग्रहों में विभिन्न महिलाओं ने पर चढ़कर हिस्सा लिया जिनमें सुमित्रा देवी, इंदिरा देवी, विद्या देवी, शारदा देवी और सुशील गोयल प्रमुख थी।

जोधपुर प्रजामण्डल–

रामादेवी (जय नारायण व्यास की पुत्री) कृष्णा कुमारी (अखिलेष्वर प्रसाद की पत्नी) दयावती (रामचंद्र पालीवाल की पत्नी) आदि ने आम सभाओं को संबोधित किया एवं रियासतों के असहयोग की नीति को प्रसारित किया एवं आम जनता को क्रांतिकारियो का सहयोग करने हेतु जागृत किया ।24 दिसंबर 1942 ई को एक सभा में सूरज देवी माथुर और सावित्री देवी माथुर ने उत्तरदाई शासन संबंधी गीत गाए। इस तरह से इन्होंने ने प्रजामण्डल आंदोलन को लोगों तक लोकप्रिय बनाया। भरतपुर प्रजामंडल

सरस्वती बोहरा – परिषद ने 20 मार्च 1941 ई को मास्टर आदित्येंद्र की अध्यक्षता में राजनीतिक सम्मेलन किया, सम्मेलन के दौरान 21 मार्च को महिला सभा हुई जिसकी अध्यक्षता सरस्वती बोहरा ने की

बसंती देवी – यह गणेश जी लाल की पत्नी है इन्होंने 1945 ईस्वी में सत्यदेव विद्या अलंकार की अध्यक्षता में भरतपुर राज्य छात्र आंदोलन नामक सम्मेलन में महिला सभा की अध्यक्षता की।

उपसंहार:–

विश्व में अंतिम उपनिवेश महिला है। महिलाओं की स्थिति भारत में आरम्भिक काल को छोड़कर दोयम दर्जे की रही है। राजस्थान में महिलाओं पर अनेक प्रकार के सामाजिक तथा परंपरागत प्रतिबंध थे। शिक्षा में भागीदारी और संपत्ति के अधिकार की निम्न स्थिति थी। राजस्थान की कुछ महिलाओं ने राष्ट्रीय आंदोलन से प्रेरणा पाकर किसान और प्रजामण्डल आंदोलन में सक्रिय भाग लिया और राजनीतिक जागरूकता पैदा की। बाद के समय में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाएं जिस प्रकार एकजुट होकर प्रभात फेरी निकालती थी तथा चरखा चलाकर अपने परिवार का पोषण करती थीं उससे महिला सशक्तिकरण की धारणा बलवती होती है। इतना ही नहीं राष्ट्रीय सत्याग्रह में भागीदारी, विदेशी वस्त्रों की होली जलाना और शराब की दुकानों के समक्ष धरना देते हुए, जिस प्रकार वे पुलिस प्रताड़ना को सहती रहती थी तथा जेल जाकर भी जिनकी हिम्मत कम नहीं हुई, ये सब इस तथ्य को इंगित करते हैं कि तत्कालीन राजस्थान की महिलाएं अन्य क्षेत्रों की महिलाओं की तुलना में कम जागरूक नहीं थी। राजस्थान की महिलाएँ अपने शौर्य त्याग और बलिदान के लिए सदैव ही अग्रणी रही है, यहाँ कि महिलाओं ने पुरुषों के साथ कंधा से कंधा मिलाकर खेत–खलिहान और कारखानों में काम किया है। वहीं इन्होंने आन्दोलन में शासन के अत्याचारों में पुरुषों के साथ संघर्ष किया था।

राजस्थान की महिलाओं में जागृति का अंकुर 1920 के दशक में प्रस्फुटित हुआ। समाज सुधार आन्दोलन में घूंघट हटाना, नव जागृति के लोक गीत गाना, रूढ़िवादिता का त्याग और अंधविष्वासों के त्याग आदि अधिकांश कार्यक्रम महिलाओं ने आयोजित किए। सुधार के कारण महिलाओं में जनजागरण हुआ और इसके फलस्वरूप आजादी के बाद राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक क्षेत्र में वे प्रगति करने लगी। वर्तमान काल में पर्दा प्रथा, घूँघट प्रथा और विधवाओं की निम्न स्थिति बनी हुई है। आधुनिक राजस्थान के इतिहास से प्रेरणा पाकर महिलाएं जागृत हो सकती है। महिला नायकों की ऐतिहासिक भूमिका को उत्सव के रूप में मनाया जा सकता है।आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान गुमनाम नायकों पर शोध की परिकल्पना की गई हैं। राजस्थान की महिलाओं की जनजागरण में भूमिका और महिला नायकों की स्थिति को इतिहास में जगह मिलनी चाहिए।

सन्दर्भ सूचीः–

- शर्मा, डॉ. गोपीनाथ, राजस्थान का इतिहास, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 2008
- website - amritmahotsav.nic.in
- महिला स्थिती पर चर्चा, महिपाल दान भिंयाड़ से 20–02–2024, जयपुर
- हरिश्चंद्र वर्मा, मध्यकालीन भारत भाग 1, पृष्ट संख्या 54 हिंदी माध्यम कार्यान्वन निदेशालय नई दिल्ली 2006
- उपिंद्र सिंह, प्राचीन एवं पूर्व मध्यकालीन भारत का इतिहास, पियर्सन।
- व्यास, डॉ. रामप्रसाद आधुनिक राजस्थान का वृहत इतिहास खण्ड–1.2. राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 1998
- गहलोत, जगदीश सिंह, राजपूताना का इतिहास भाग–1, 2, जोधपुर, 1937
- के सी श्रीवास्तव, प्राचीन भारत का इतिहास एवं संस्कृति, यूनाइटेड बुक डिपो इलाहाबाद, 2009–10 ।
- टॉड, कर्नल जेम्स, एनाल्स एण्ड एन्टिक्वीटीज ऑफ राजस्थान, भाग–1.2. राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर, 2008
- ओझा, गौरीशंकर हीराचंद, राजपूताने का इतिहास, वैदिक यंत्रालय, अजमेर, 1937
- पुस्तकाल सामग्री – केंद्रीय पुस्तकालय, मोहन लाल सुखाड़िया विष्वविद्यालय।
- पण्डित विश्वेश्वर नाथ, मारवाड़ का इतिहास भाग–1.2. राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर
- ठाकुर, देशराज, रियासती भारत के जाट जन सेवक, भरतपुर, 1949
- पानगड़िया, बी. एल.राजस्थान में स्वतंत्र संग्राम, राजस्थान हिंदी ग्रन्थ अकादमी जयपुर, 1985
- परिहार, डॉ. विनीता, राजस्थान में प्रजामण्डल आन्दोलन, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर, 2010
- गहलोत, सुखवीरसिंह, राजस्थान स्वतंत्रता आन्दोलन का इतिहास, जयपुर, 1992